प्रतिदर्श प्रश्नपत्र - 2

सत्र 2021-22

विषय- हिंदी 'ब'

कोड - 085

कक्षा - 9th

समय : 1 घंटे | पूर्णांक - 40

सामान्य निर्देश—

- **प्रश्न-पत्र में दो खंड दिए गए हैं— खंड 'क' और खंड 'ख'।**
- **खंड 'क' में पाठ्यपूरक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उपप्रश्न दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**
- **खंड 'ख' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उपप्रश्न दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

खण्ड–'क'

पाठ्यपूरक–गद्य एवं पद्य

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए— $2 \times 2 = 4$

(क) "अन्दर ही अन्दर मेरा बटुआ काँप गया।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।

(ख) महामारी का क्या परिणाम निकला ? 'एक फूल की चाह' कविता के आधार पर उत्तर लिखिए।

(ग) धार्मिक शोषण को किस प्रकार रोका जा सकता है? 'धर्म की आड़' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

2. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए— $4 \times 1 = 4$

(क) अतिथि को जाने के लिए लेखक ने किस-किस तरह से संकेत दिए?

(ख) प्रसाद लेकर मंदिर के द्वार पर पहुँचने पर सुखिया के पिता को क्या सुनाई दिया ? 'एक फूल की चाह' कविता के आधार पर लिखिए।

पूरक पाठ्यपुस्तक–संचयन भाग–1

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में लिखिए— $3 \times 2 = 6$

(क) अस्वस्थ लेखिका का ध्यान गिल्लू किस तरह रखता? इस कार्य से गिल्लू की कौन-सी विशेषता का पता चलता है?

(ख) लेखक की माँ ने घटना सुनकर लेखक को गोद में क्यों बिठा लिया? 'स्मृति' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ग) लेखक का परिचय हामिद खाँ से किन परिस्थितियों में हुआ?

खण्ड–'ख'

लेखन

4. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए— $6 \times 1 = 6$

(क) व्यक्ति को व्यक्ति से दूर करता–इंटरनेट

संकेत बिन्दु—कैसे, दुष्प्रभाव, निष्कर्ष

(ख) गाँव में बिताया एक दिन

संकेत बिन्दु—कब, कहाँ, अनुभव, विशेष बात

(ग) ट्रैफिक जाम की समस्या

संकेत बिन्दु—ट्रैफिक की समस्या का आधार, लोगों की जल्दबाजी, व्यवस्था की कमी, सुधार के उपाय।

5. पत्र लेखन— $5 \times 1 = 5$

(क) अपने मित्र को स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल की प्रेरणा देते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

(ख) आपकी सखी की माताजी की अचानक मृत्यु की सूचना मिली है। इस विषय में उसको सांत्वना पत्र लिखिए।

6. निम्नलिखित दिए गए किन्हीं दो विषयों पर संदेश लेखन कीजिए— $2.5 \times 2 = 5$

(क) रमज़ान त्योहार की शुभकामनाएँ देते हुए संदेश लेखन।

अथवा

मित्र को स्वतंत्रता दिवस पर शुभकामना संदेश।

(ख) कोरोना महामारी बचाव हेतु सरकार द्वारा संदेश।

अथवा

अपने मित्र को होली की शुभकामनाओं संबंधी संदेश लिखिए।

7. निम्नलिखित दिए गए किन्हीं दो विषयों पर संवाद लेखन कीजिए— $2.5 \times 2 = 5$

(क) ''विकास के मॉडल—हाईवे, मॉल, मल्टीप्लेक्स'' विषय पर शिक्षक और छात्र के बीच परस्पर संवाद को लिखिए।

अथवा

पृथ्वी सारे संसार का भार सहती है और आकाश जीवन देता है। दोनों में श्रेष्ठता निर्धारित करने के लिए विज्ञान के दो विद्यार्थियों की परस्पर चर्चा लिखिए।

(ख) समाज में लड़कियों की सुरक्षा को लेकर सवाल उठ रहे हैं। आत्म–सुरक्षा की सीख देते हुए एक माँ और बेटी का संवाद लिखिए।

अथवा

कक्षा में होने वाली वाद–विवाद प्रतियोगिता हेतु प्रोत्साहित करते हुए अध्यापक व छात्र के बीच हुए संवाद को लिखिए।

8. निम्नलिखित दिए गए किन्हीं दो विषयों पर नारा लेखन कीजिए— $2.5 \times 2 = 5$

(क) हिंदी दिवस पर 'हिंदी भाषा' को ध्यान में रखते हुए नारा लेखन कीजिए।

अथवा

'जल संरक्षण' पर नारे लिखिए।

(ख) 'पर्यावरण सुरक्षा' पर तीन नारे लिखिए।

अथवा

यातायात सम्बन्धी नारा लिखिए।

❑❑❑

उत्तरमाला

खण्ड–`क'

पाठ्यपूरक–गद्य एवं पद्य

1. **(क)** अतिथि के स्वागत-सत्कार में अधिक खर्च होने व आर्थिक स्थिति बिगड़ने के डर से लेखक का बटुआ काँप उठा।
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) 2

व्याख्यात्मक हल—

जिस दिन अतिथि आया, मेजबान को उस दिन आशंका हुई कि कहीं वह कुछ दिन ठहरने की इच्छा से तो नहीं आया। उसकी आवभगत पर होने वाले खर्चे का अनुमान लगाकर लेखक भयभीत हो उठा था। उसे अपनी आर्थिक स्थिति बिगड़ने की आशंका सताने लगी।

(ख) महामारी का यह परिणाम निकला कि हजारों लोग मर रहे थे। जलती चिताएँ तथा रोते-बिलखते लोग चारों ओर दिखाई दे रहे थे। चारों तरफ बीमारी व मौत के कारण त्राहि-त्राहि हो रही थी। **2**

(ग) उसे साहस और दृढ़ता के साथ रोकने का जनता का अडिग निश्चय।
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) 2

व्याख्यात्मक हल—

कुछ स्वार्थी लोग धर्म के नाम पर लोगों का धार्मिक शोषण करते हैं। इसे रोकने का उपाय यही है कि लोगों को धर्म की सही शिक्षा दी जाए। धर्म और ईमान के नाम पर किए जाने वाले इस भीषण व्यापार को रोकने के लिए साहस और दृढ़ता के साथ प्रयास किया जाना चाहिए। यदि ऐसा न हुआ तो आपसी हिंसा और अधिक बढ़ जाएगी।

2. **(क)** अतिथि को जाने के लिए लेखक ने कई तरह से संकेत दिए। लेखक अतिथि के सामने उसे दिखाकर तारीखें बदलता है। तारीखें बदलते समय वह इस बात को दोहराता है कि आज कौन-सी तारीख हो चुकी है। ऐसा करके वह अतिथि को जाने की याद दिलाना चाहता है। इसके अतिरिक्त उसने धोबी को कपड़े देने की अपेक्षा लॉण्ड्री में कपड़े देने का सुझाव दिया जिससे कपड़े जल्दी धुलकर आ सकें। उसके द्वारा कहे गए 'जल्दी धुल सकें' वाक्य में यह भी संकेत था कि अतिथि को शीघ्र अपने घर लौट जाना चाहिए। लेखक ने अतिथि से अपनी नाराजगी दर्शाते हुए उससे गप्पें मारना और साथ में ठहाके लगाना बंद कर दिया। उनके बीच का सौहार्द बोझिल होकर बोरियत में परिवर्तित हो गया। घर में खाना 'डिनर' से चलकर 'खिचड़ी' पर आ गया। यह भी एक ठोस संकेत था, अतिथि को वापस भेजने का। इस तरह लेखक ने अतिथि को शीघ्र घर वापस जाने के लिए कई संकेत दिए। **4**

(ख) सुखिया की इच्छा को पूरा करने के लिए उसका पिता पुजारी से प्रसाद लेकर जैसे ही मंदिर के द्वार पर पहुँचा उसे कुछ लोगों ने पहचान लिया कि वह जाति से अछूत है। तब वे आपस में कहने लगे कि इसे पकड़ो ताकि भागकर जाने न पाए। यह धूर्त है। भले मनुष्यों के समान साफ-सुथरे कपड़े पहनकर हमें धोखा दे रहा था। इसने मंदिर में घुसकर उसकी पवित्रता को नष्ट कर दिया है। यह पापी है। **4**

पूरक पाठ्यपुस्तक–संचयन भाग–1

3. **(क)** लेखिका को एक मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा था। लेखिका की अनुपस्थिति में गिल्लू का किसी काम में भी मन नहीं लगता था। यहाँ तक कि उसने अपना मनपसंद भोजन काजू खाना भी कम कर दिया था। वह हमेशा लेखिका का इंतजार करता रहता और किसी के भी आने की आहट सुनकर लेखिका के अस्पताल से लौट आने की उसकी उम्मीदें बढ़ जातीं। लेखिका के घर वापस आने के बाद गिल्लू तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से लेखिका का सिर एवं

बाल धीरे-धीरे सहलाता रहता था। लेखिका को उसकी उपस्थिति एक परिचारिका की उपस्थिति के समान महसूस होती। इन्हीं कारणों से लेखिका ने गिल्लू के लिए 'परिचारिका' शब्द का प्रयोग किया है। **3**

(ख) लेखक अपने वर्णन में बताता है कि बच्चों की टोली स्कूल के रास्ते में पड़ने वाले सूखे कुएँ में पड़े एक साँप को ढेले मारकर उसकी फुँफकार सुनने की अभ्यस्त हो गई थी। लेखक जब अपने बड़े भाई द्वारा दी गई चिट्ठियों को मक्खनपुर के डाकखाने में डालने के लिए अपने छोटे भाई के साथ जा रहा था, तब रास्ते में कुएँ वाले साँप को ढेले मारकर उसकी फुँफकार सुनने का विचार पुनः उसके मन में आया।

लेखक के इसी प्रयास के दौरान उसकी टोपी में रखी चिट्ठियाँ कुएँ में जा गिरीं। लेखक का उपर्युक्त कथन इसी घटना के संदर्भ में है क्योंकि कुएँ के बहुत अधिक गहरा होने, अपनी उम्र कम होने और सबसे ज्यादा कुएँ में पड़े विषैले साँप के डर से वह चिट्ठियों को निकालने का कोई उपाय नहीं समझ पा रहा था। चिट्ठियाँ न मिलने का परिणाम बड़े भाई द्वारा दिया जाने वाला दंड था।

इसलिए लेखक निराशा, भय और उद्वेग अर्थात् घबराहट के मनोभावों के बीच फँस गया था। स्वाभाविक रूप से बचपन में कोई कार्य गलत हो जाता है तो बच्चे अपने अपराधनिवारण या उससे संबंधित दंड से बचने हेतु माँ के लाड़-प्यार और उसकी गोद का आश्रय लेना स्वभावतः पसंद करते हैं। माँ की ममता बच्चों के लिए एक सुरक्षात्मक आवरण की भाँति कार्य करती है। इसी कारण लेखक ने ऐसा कहा है। **3**

(ग) लेखक एक बार तक्षशिला के पौराणिक खंडहर देखने गया था। तक्षशिला में कड़ी धूप और भूख-प्यास के कारण लेखक का हाल बुरा हो रहा था। वह रेलवे स्टेशन से पौन मील दूरी पर बसे एक गाँव की ओर चल पड़ा। दूर गाँव में एक दुकान पर चपातियाँ सेंकता हुआ हामिद मिला। इस प्रकार खाने के बारे में पूछताछ करने के कारण उसका हामिद खाँ से परिचय हुआ। **3**

खण्ड-'ख'

लेखन

4. (क) **व्यक्ति को व्यक्ति से दूर करता-इंटरनेट**

संकेत बिन्दु—कैसे, दुष्प्रभाव, निष्कर्ष। **6**

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। इंटरनेट ने आज दुनिया को हमारी मुट्ठी में ला दिया है। बस क्लिक कीजिए और सब कुछ हमारी आँखों के सामने हाजिर। आज इंटरनेट घर-घर की जरूरत बन गया है। आज लोग कम्प्यूटर, लैपटॉप और विशेष रूप से मोबाइल के जरिए इंटरनेट का प्रयोग करते हैं, लेकिन इसके अत्यधिक प्रयोग ने व्यक्ति को व्यक्ति से दूर कर दिया है। लोग अपना अधिकांश समय इंटरनेट के प्रयोग में व्यतीत करते हैं। सोशल साइटों, फेसबुक, व्हाटसअप आदि पर चैटिंग करते हुए इतना खो जाते हैं कि उन्हें अपने चारों ओर के लोगों का ध्यान ही नहीं रहता। वे सामने बैठे व्यक्ति और आस-पास के लोगों के प्रति उदासीन बने रहते हैं। सबके साथ रहते हुए भी वे एकाकी जीवन व्यतीत करते हैं। वे दूसरों के सुख-दुःख के प्रति भी संवेदनहीन बने रहते हैं।

त्योहारों, विशेष पर्वों आदि के अवसर पर जहाँ लोग एकत्र होते थे, एक-दूसरे से मिलकर बधाई देते थे वहाँ अब इंटरनेट पर बधाई देकर ही अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर देते हैं। इसका प्रयोग करने वाले अपनी एक अलग दुनिया बना लेते हैं जिससे धीरे-धीरे समाज से अलग रहने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के 'फोबिया' का शिकार हो जाते हैं। इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग से बच्चे भी अछूते नहीं रहे हैं। इंटरनेट के प्रयोग के कारण बच्चे घर के बुजुर्गों के साथ अपना समय नहीं बिताते जिससे सहज ही मिलने वाले संस्कारों से वंचित रह जाते हैं। आस-पड़ोस के लोगों के बारे में भी अनजान बने रहते हैं। इसलिए मुसीबत के समय उनका सहयोग भी प्राप्त नहीं होता। हमें विज्ञान को इस आधुनिक देन का आदर करते हुए इसका प्रयोग नियंत्रित और समझदारी से करना चाहिए तभी इसके लाभ हमें समृद्ध करेंगे।

(ख) **गाँव में बिताया एक दिन**

संकेत बिन्दु—कब, कहाँ, अनुभव, विशेष बात **6**

गाँव शब्द सुनते ही हमारा मन गाँव के हरियाली से भरे प्रदूषण मुक्त वातावरण में जाने को मचल उठता है। ऐसा ही एक अवसर मुझे तब प्राप्त हुआ जब पिताजी को गाँव की जमीन के सिलसिले में गाँव जाना पड़ा। मैं भी एक दिन के लिए उनके साथ गाँव गया। मेरे गाँव का नाम अलावां हैं, लेकिन बोलने की सुविधा के लिए लोगों ने इसे 'अलामा' बना दिया है। यह बिहार के नालंदा जिले में बसा तीन-चार हजार आबादी वाला एक छोटा-सा गाँव है। हम बस द्वारा गाँव पहुँचे।

घर पहुँचने के लिए पिताजी ने एक तांगा किया। हम गाँव के कच्चे रास्तों व बाजार से होते हुए तांगे की सवारी का मजा लेते घर पहुँचे। सब हमसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। हाथ-मुँह धुलाकर दादी ने पानी पिलाया। कुँए के पानी की उस मिठास के आगे मुझे शहरों का मिनरल वाटर भी फीका जान पड़ा। नाश्ता कर पिताजी, दादाजी के साथ कार्य में व्यस्त हो गए, तब मैं अपने चचेरे भाई अंशु के साथ गाँव में घूमने निकल गया। अंशु ने अपने मित्रों को भी बुला लिया। हम सब पहले आम के बाग में गए वहाँ हमने कुछ ताजे आम तोड़कर खाये फिर पास की नहर पर गए, वहाँ के ठंडे पानी में हमने खूब मस्ती की। कुछ ही देर में मैं सबके साथ घुलमिल गया। दोपहर को हम थककर घर पहुँचे। खाना खाकर कुछ देर विश्राम करने के बाद अंशु के मित्र मुझे पतंगबाजी के लिए बुलाने आ गए। उन सबके साथ मिलकर पतंग उड़ाने में मुझे बहुत मजा आया। यहाँ की साफ़ और ताजी हवा में मुझे सुकून का एहसास हुआ। दूर तक फैले हरे-भरे खेत और पक्षियों की चहचहाहट से मन प्रसन्न हो गया। रात में सब लोगों के बिस्तर छत पर लगाए गए। चाँदनी रात में तारों को देखने में बहुत आनंद आया। देर रात तक सब लोग बातें करते रहे। दादी ने पिताजी के बचपन की बहुत सारी बातें भी बताईं। अगले दिन मैं पिताजी के साथ वापस लौटा तब मैं गाँव में बिताए उस एक दिन की ढेर सारी यादें भी अपने साथ ले आया था।

(ग) **ट्रैफिक जाम की समस्या**

संकेत बिन्दु—ट्रैफिक की समस्या का आधार, लोगों की जल्दबाजी, व्यवस्था की कमी, सुधार के उपाय **6**

विज्ञान ने आज हमारी जीवन-शैली को पूरी तरह बदल दिया है, विज्ञान के आविष्कारों में से एक महत्वपूर्ण आविष्कार है यातायात के साधन, जिसके कारण हम मीलों की दूरी कुछ ही समय में सहजता से पूरी कर लेते हैं जिसे पूरा करने में प्राचीन समय में हमें महीनों लग जाते थे। वर्तमान समय में अधिकांश लोगों के पास अपने निजी वाहन कार, मोटरसाइकिल, स्कूटर आदि हैं जो सड़कों पर जाम की दिनों दिन बढ़ती समस्या का सबसे बड़ा कारण हैं। आज हर व्यक्ति जल्दी में नजर आता है और इसी जल्दबाजी के कारण सड़क पर जाम लग जाता है। बाइक, कार सवार अपनी लाइन में चलने के स्थान पर दूसरे को ओवर टेक करते हैं तथा ट्रैफिक पुलिस के द्वारा सख्ती से अपने कर्त्तव्य पालन न करने के कारण इसे बढ़ावा मिलता है। ट्रैफिक जाम की समस्या से मुक्ति पाने के लिए सरकार को ट्रैफिक के कड़े नियम बनाने चाहिए तथा सख्ती से उन्हें लागू करना चाहिए। इसके साथ ट्रैफिक के नियमों के बारे में लोगों को जागरूक करना चाहिए। सभी के सम्मिलित प्रयासों से ही इस समस्या से निजात मिल सकती है।

5. **(क)** 31, हरीश नगर **5**

मेरठ।

दिनांक : 18 जुलाई, 20.....

प्रिय मित्र राकेश,

सप्रेम नमस्कार।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और तुम्हारी कुशलता की कामना करता हूँ। कल ही तुम्हारे द्वारा मेरे जन्मदिन के उपहारस्वरूप भेजा गया चायनीज कैमरा प्राप्त हुआ। बहुत प्रसन्नता हुई, लेकिन यदि यह कैमरा स्वदेशी होता, तो और अधिक प्रसन्नता होती। स्वदेशी वस्तुओं की गुणवत्ता विदेशी वस्तुओं से कम नहीं होती, वरन स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत होती है, जो देश के विकास में सहायक है।

मित्र ! हमारे प्रधानमंत्री द्वारा भी 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा दिया जा रहा है। कहा भी गया है—'स्वदेशी बनो, स्वदेशी अपनाओ।' अत: हमें स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

आशा है तुम मेरे सुझाव पर ध्यान देते हुए स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को दैनिक जीवन में बढ़ावा दोगे और दूसरों को भी प्रेरित करोगे। घर में सभी बड़ों को मेरा चरण-स्पर्श और छोटों को शुभ-स्नेह।

तुम्हारा मित्र,

मोहित

अथवा

(ख) 4/73 इन्दिरा नगर,

कानपुर।

दिनांक.....

प्रिय श्वेता,

नमस्कार।

आज ही तुम्हारे पत्र से मालूम हुआ कि तुम्हारी पूज्य माता जी का स्वर्गवास हो गया है। मेरा मन शोक से व्याकुल हो गया है। मुझे अब भी वे दिन याद हैं, जब हम दोनों के परिवार लखनऊ में पास-पास रहते थे। एक ही गली में रहने के कारण हर समय का साथ था। तुम्हारी माताजी मुझे पुत्री के समान स्नेह करती थीं। मैं जब पिछले वर्ष उनसे मिली थी तो वे काफी दुबली हो गई थीं और आँखों से साफ देख भी नहीं पाती थीं। उनकी आत्मा उस दुबली देह में कष्ट का अनुभव कर रही थी। प्रत्येक शरीर अन्त में समाप्त होता है। ईश्वर के इस नियम पर किसी का वश नहीं चलता। इस दु:खद अवसर पर मैं स्वयं उपस्थित होना चाहती थी, किन्तु कई दिन से बीमार चल रही हूँ। डॉक्टर ने दस दिन के लिए पूर्ण विश्राम की सलाह दी है। ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि माताजी की आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें और परिवार को इस असहनीय दु:ख को सहन करने की शक्ति दें। स्वस्थ होकर मैं शीघ्र ही तुमसे मिलने आऊँगी।

शोकाकुल हृदय,

क, ख, ग

6. **(क)** **रमज़ान त्योहार की शुभकामनाएँ देते हुए संदेश लेखन—** **2.5**

संदेश

दिनांक 25.4.20××

प्रात:- 6.00 बजे

प्रिय मित्र,

मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार को रमज़ान पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। ईश्वर तुम्हें और तुम्हारे परिवार को खुशियाँ ही खुशियाँ दे। इसी शुभकामना के साथ—

फलक पर चाँद आया है
नई खुशियाँ संग लाया है,
इबादत में सबके सर झुकेंगे,
ईश्वर सबकी हर इच्छा पूरी करेंगे।

तुम्हारा राजेश

अथवा

मित्र को स्वतंत्रता दिवस पर शुभकामना संदेश—

संदेश

15 अगस्त, 20××

प्रात:– 8.00 बजे

प्रिय मित्र

वर्ष 20XX के स्वतंत्रता दिवस की बहुत-बहुत बधाई। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि आप सभी के लिए यह स्वतंत्रता दिवस मंगलमय हो। ईश्वर से यह भी प्रार्थना है कि हम सब सदैव इस स्वतंत्र (खुली) हवा में साँस लेते रहें और हमारा देश खुशहाल रहे। देश को स्वतंत्रता दिलवाने वाले सभी शहीदों को शत-शत नमन। हमें आज प्रण करना चाहिए कि हम भी अपने देश की स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देंगे।

तुम्हारा मित्र

मोहन

(ख) कोरोना महामारी बचाव हेतु सरकार द्वारा संदेश—

संदेश

23 मार्च, 20××

समय प्रात:— 10.00 बजे

प्रिय देशवासियों,

आप सभी से कोरोना काल के दौरान घर में रहने का आग्रह है। कोरोना महामारी के कारण कुछ देश ही नहीं अपितु संपूर्ण संसार त्रस्त है। आप सभी एक-दूसरे से सामाजिक दूरी बना कर रखें, सदैव मुँह व नाक को ढककर रखें एवं बार-बार हाथ धोएँ। सभी के जीवन की मंगलकामना के साथ।

क, ख, ग मंत्रालय

2.5

अथवा

अपने मित्र को होली की शुभकामनाओं संबंधी संदेश—

संदेश

18, मार्च, 20XX

समय : प्रात: 6.30 बजे

प्रिय मित्र,

रोहित

कल रंगों का त्योहार होली है। तुम्हें और तुम्हारे परिवार को होली की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। होली का त्योहार तुम्हारे जीवन में बहुत सारी खुशियाँ और रंग लाए। मेरे और मेरे परिवार की ओर से होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा मित्र

सुमित

7. (क) ''विकास के मॉडल—हाईवे, मॉल, मल्टीप्लेक्स'' विषय पर शिक्षक और छात्र के बीच परस्पर संवाद—

शिक्षक – मोहन! आज का अखबार पढ़ा तुमने।

मोहन – जी श्रीमान्! किन्तु उसमें ऐसी क्या विशेष खबर थी?

शिक्षक – यानी तुमने ठीक से नहीं पढ़ा। उसमें लिखा था कि हमारे शहर के विकास मॉडल को मंजूरी मिल गई है।

मोहन – जी श्रीमान्! मैंने पढ़ा! ये तो बहुत प्रसन्नता का विषय है कि अब हमारा शहर भी विकास के पथ पर अग्रसर होता हुआ दिखाई देगा। यहाँ भी चारों ओर हाइवे, मॉल और मल्टीप्लेक्स होंगे।

शिक्षक – ठीक कहा मोहन, बताओगे इससे हमारे शहर को क्या-क्या लाभ होंगे?

मोहन – शहर की सड़कों पर वाहनों का भार कम होगा, हमारी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, साथ ही शहरवासियों को मनोरंजन के साधन व अपनी आवश्यकताओं की सभी वस्तुएँ एक ही छत के नीचे आसानी से उपलब्ध होंगी।

शिक्षक – बिल्कुल ठीक मोहन, शाबाश! **2.5**

अथवा

पृथ्वी सारे संसार का भार सहती है और आकाश जीवन देता है। दोनों में श्रेष्ठता निर्धारित करने के लिए विज्ञान के दो विद्यार्थियों की परस्पर चर्चा—

नितिन – मित्र सुरेश! आज विज्ञान की कक्षा में अध्यापिका ने पृथ्वी और आकाश के विषय में कितनी अच्छी-अच्छी और रोचक जानकारियाँ दीं।

सुरेश – सत्य कह रहो हो मित्र ! आज हमें पृथ्वी और आकाश के विषय में कई नए तथ्य ज्ञात हुए।

नितिन – पृथ्वी कितनी श्रेष्ठ है, कितनी सहनशीलता है उसमें। सबका भार सहन करती है।

सुरेश – मित्र नितिन, धरती और आकाश भी तो कितना श्रेष्ठ है। यह सभी को जीवन प्रदान करता है। यदि आकाश न हो तो पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं है।

नितिन – यदि पृथ्वी हमारा भार न सहती तो क्या होता? हमारे खाने के लिए अन्न व रहने के लिए स्थान—सब पृथ्वी पर उपलब्ध हैं।

सुरेश – मित्र नितिन! धरती और आकाश की श्रेष्ठता पर बहस करते हुए जमाने गुजर जाएँगे, पर ये सिद्ध न हो सकेगा।

नितिन – सही कहा मित्र! ये दोनों ही अपनी-अपनी जगह श्रेष्ठ हैं।

(ख) समाज में लड़कियों की सुरक्षा को लेकर सवाल उठ रहे हैं। आत्म-सुरक्षा की सीख देते हुए एक माँ और बेटी का संवाद—

माँ – लड़कियों को अपनी सुरक्षा के प्रति खुद ही जागरूक रहना चाहिए।

बेटी – हाँ माँ! आप ठीक कह रही हैं। आजकल हमारे कॉलेज में स्वयं आत्मरक्षा करने के सम्बन्ध में शिविर लगाकर जानकारी दी जा रही है।

माँ – कैसी जानकारी?

बेटी – शारीरिक हिंसा से बचाव के दाँव-पेंच व शरीर को चुस्त व दुरुस्त रखने के व्यायाम सिखाते हैं—अचानक हुए आक्रमण से बचाव व स्वयं आक्रमण करने के तरीके बताते हैं।

माँ – अच्छा, तो यह सब लड़कियों को अवश्य सिखाना चाहिए।

बेटी – हमारे कॉलेज की अधिकतर लड़कियाँ अपनी आत्मरक्षा के तरीके सीख चुकी हैं।

माँ – लेकिन इसके अलावा भी लड़कियों को मर्यादित पहनावा रखना चाहिए। किसी की भी बातों पर सहज विश्वास नहीं करना चाहिए। सुनसान एवं बिना जानी-पहचानी जगह पर सुरक्षा के साथ ही जाना चाहिए। किसी भी समस्या या परेशानी के सम्बन्ध में घर के लोगों को तुरन्त बताकर सलाह-मशवरा कर लेना चाहिए। खास व विश्वास के मित्रों को ही फोन नम्बर आदि देना चाहिए। **2.5**

अथवा

कक्षा में होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिता हेतु प्रोत्साहित करते हुए अध्यापक व छात्र के बीच हुए संवाद

छात्र – नमस्कार, गुरु जी!

अध्यापक – नमस्कार, बेटे! सुखी रहो। कहो, कैसे आना हुआ?

छात्र – कल गांधी जयंती है, गुरुजी। मुझे कल बाल सभा में गाँधी जी के जीवन के विषय में कुछ बोलना है।

अध्यापक – कहो, मैं उसमें तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ?

छात्र – गुरु जी! मैंने गांधी जी के विषय में भाषण लिख तो लिया है, अब उसे रट रहा हूँ। थोड़ी देर बाद आप मुझसे सुन लीजिए।

अध्यापक – ऐसी भूल कभी मत करना, अंशु।

छात्र – क्यों गुरु जी, क्यों नहीं?

अध्यापक – तुम नहीं जानते, बेटे। जो चीज़ रटकर सुनाई जाती है, उसका श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। जब तुम बोलने के लिए श्रोताओं के सामने खड़े होगे, तो तुम्हें अनेक चेहरे दिखाई देंगे। कुछ तुम्हारे भाषण में दिलचस्पी लेते दिखाई देंगे। कुछ आपस में बातें करते होंगे। ऐसी दशा में तुम्हें उनके चेहरों के हाव-भाव को देखकर अपने भाषण को बदलना होगा। ऐसा करने में तुम्हारी शृंखला टूट जाएगी और तुम रटे हुए भाषण को भूल जाओगे।

छात्र – किंतु मैं तो रटे बिना एक शब्द भी नहीं बोल सकता।

अध्यापक – ठीक है, पहले-पहल ऐसा ही किया जाता है, किन्तु यदि तुम बीच में कोई वाक्य भूल गए तो क्या करोगे?

छात्र – इसके लिए मैं कुछ संकेत लिखकर ले जाऊँगा।

8. (क) हिंदी दिवस पर 'हिंदी भाषा' को ध्यान में रखते हुए नारा लेखन—

- भारत माँ के भाल हिमालय पर सजी बिंदी हूँ,
  उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम को जोड़ती, आपकी भाषा हिंदी हूँ।
- संस्कृति और सभ्यता को जोड़ने का माध्यम हूँ,
  मैं सरल, सहज आपकी अपनी भाषा हिंदी आपका सम्मान हूँ।
- जन-जन की भाषा है हिंदी,
  सहजता की परिभाषा है हिंदी,
  हिंदी का सम्मान करो,
  विश्व में इसका नाम करो।

- हिंदी देश की आन है,
  जन-जन का अभिमान है,
  कोटि-कोटि की पहचान है,
  हिंदी भारत की शान है।
- माँ के माध्यम से सीखी हिंदी
  इसलिए यह मातृभाषा है
  हिंदी से ही सीखे संस्कार
  आप सभी को मेरा नमस्कार। **2.5**

अथवा

'जल संरक्षण' पर नारे—

- कल को यदि लाना है,
  तो आज से जल बचाना है।
- जल जीवन का आधार है,
  बिन इसके सूना संसार है।
- पानी की हर बूँद बचाओ,
  भविष्य को सुरक्षित बनाओ।
- जल है, प्रकृति का उपहार,
  इसके संरक्षण में ही सबका उपकार।
- पानी बचाओ, पानी बचाओ,
  पानी है अनमोल, न बहने दो पानी को,
  जानो इसका मोल।

(ख) 'पर्यावरण सुरक्षा' पर पाँच नारे—

- पर्यावरण की सुरक्षा, जीवन की रक्षा।
  पेड़-पौधे लगाओ, प्रदूषण भगाओ,
  जन-जीवन को सुरक्षित बनाओ।
- जागरूकता को फैलाना है,
  पेड़-पौधे लगाना है।
- बच्चों को दो सब शिक्षा
  पेड़ पौधों की करें सुरक्षा। **2.5**

अथवा

- मत करो इतनी मस्ती,
  जिन्दगी नहीं है सस्ती।

❑❑❑